

रॉबर्ट वानॉय, निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 9बी न्यायाधीशों में राजत्व, 1 और 2 शमूएल

न्यायाधीशों का धर्मशास्त्र

राजत्व के बारे में न्यायाधीशों का दृष्टिकोण

जैसा कि मैंने ब्रेक से ठीक पहले उल्लेख किया था, मैं आपका ध्यान न्यायाधीशों के धर्मशास्त्र पर उस हैंडआउट के एक अन्य खंड की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। वह पृष्ठ 835 पर, तीसरे पैराग्राफ के नीचे है। वहां जिस प्रश्न पर चर्चा की जा रही है वह इसराइल में राजत्व के प्रति रवैया है जो उन कहानियों और टिप्पणियों में परिलक्षित होता है जो हमें न्यायाधीशों की पुस्तक में ही मिलती हैं। जिसने भी इस सामग्री को एक साथ रखा है, उसके मन में क्या राजत्व इस्राएल के लिए अच्छी या बुरी चीज़ है? और आपने देखा कि तीसरा पैराग्राफ शुरू होता है, "पुस्तक के अंत में इस मजबूत सुझाव के बावजूद [कि उन दिनों जब इज़राइल में कोई राजा नहीं था, हर किसी ने वही किया जो उसकी अपनी नज़र में सही था], जो सुझाव देगा राजत्व के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण।" दूसरे शब्दों में, जब राजत्व आएगा तो अधिक व्यवस्था होगी। हर कोई वही नहीं करेगा जो वह चाहता है। "तो न्यायाधीशों की पुस्तक के अंत में इस मजबूत सुझाव के बावजूद, एक मानव राजा की अनुपस्थिति ने न्यायाधीशों की अवधि के दौरान अराजक स्थितियों के उदय में योगदान दिया था, इसलिए यह सुझाव दिया गया कि राजत्व वांछनीय है। कुछ व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि इस पुस्तक को समग्र रूप से राजशाही विरोधी के रूप में देखा जाना चाहिए। यह एक मुद्दा है जो 1 शमूएल तक जाता है, जहां आपको यह प्रश्न मिलता है: क्या राजत्व एक अच्छी चीज़ है या बुरी चीज़?

"इस दृष्टिकोण का आधार एक ओर गिदोन द्वारा राजत्व की पेशकश को अस्वीकार करने और दूसरी ओर न्यायियों 8:22 और 8:23 में यहोवा के राजत्व की उसकी सकारात्मक पुष्टि में पाया जाता है [हमने उस पर गौर किया], एक के साथ मिलकर अध्याय 9 में अबीमेलोक के साथ राजत्व के विनाशकारी विवरण की अपील। याद रखें मैंने उल्लेख किया था कि अबीमेलोक का शासन शकेम के विनाश के साथ समाप्त हुआ? "वास्तव में, कुछ व्याख्याकारों का मानना है कि उपसंहार में अध्याय 17-21 में राजत्व के सकारात्मक दृष्टिकोण [इज़राइल में कोई राजा नहीं था और हर किसी ने वही

किया जो उसकी अपनी नज़र में सही था] और कथित तौर पर नकारात्मक दृष्टिकोण के बीच तनाव पाया अध्याय 8 और 9 में हम पाते हैं कि राजत्व इतना मौलिक है कि विरोधाभासी रवैये को केवल पाठ की विभिन्न परतों को मानकर ही समझाया जा सकता है। यह तनाव और अंतर्निहित स्रोतों के उस तरह के विश्लेषण पर वापस जाता है। "इस समाधान के अभाव में, अन्य व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि कोई राजा नहीं है और हर कोई जैसा चाहे वैसा कर रहा है, जो कुछ भी हो रहा था उसके प्रति सकारात्मक अर्थ में देखा जा सकता है और यह पुस्तक के राजत्व पर समग्र नकारात्मक दृष्टिकोण के अनुरूप है।" मुझे लगता है कि इस पर बहस करना कठिन बात है।

लेकिन अगला पैराग्राफ वह कुछ बताता है जो मुझे लगता है कि यहां चल रहा है। "इस बहस का अधिकांश भाग एक महत्वपूर्ण बिंदु से चूक जाता है। न्यायाधीशों के अध्याय 8 और 9 मूल रूप से राजत्व के विरोध में नहीं हैं, और अध्याय 17-21 यह सुझाव नहीं देते हैं कि मानव राजत्व अपने आप में इज़राइल की समस्या का समाधान है। दूसरे शब्दों में, मुझे ऐसा लगता है कि यहां एक गलत विरोधाभास का निर्माण किया गया है। "न्यायाधीशों 8:22-23 यह नहीं कहता कि मानव राजत्व गलत है, लेकिन यह यहोवा के राजत्व की मान्यता के महत्व की दृढ़ता से पुष्टि करता है। संदर्भ में, यह गिदोन को मानव राजत्व की पेशकश के साथ यहोवा के राजत्व के इनकार का संयोजन है जिसके लिए गिदोन को उसी तरह से प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता थी जैसा उसने किया था। इस्राएली कहते हैं, 'हम पर शासन करो, क्योंकि तुमने हमें मिद्यान के हाथ से बचाया है,' न्यायियों 8:22। मिद्यानियों पर इसराइल की जीत के लिए कौन जिम्मेदार था, इसका यह गलत आकलन युद्ध से पहले गिदोन के कार्रवाई के आह्वान, जहां यह कहता है, 'प्रभु मिद्यानियों के शिविर को आपके हाथों में दे रहा है,' के साथ-साथ बयान से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। यहोवा, इस्राएल को यह घमंड नहीं करना चाहिए कि उसकी अपनी ताकत ने उसे बचा लिया है (7:2)।" [मेरे लिए यही मुद्दा है।] "इस संदर्भ में, गिदोन प्रस्ताव को अस्वीकार करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था और साथ ही, बिना किसी अनिश्चित शब्दों के, अपने लोगों पर यहोवा के निरंतर शासन की पुष्टि कर सकता था, जैसा कि हर्बर्ट नोट करता है। यहोवा इस्राएल का उद्धारकर्ता है, और इस्राएल को यह नहीं भूलना चाहिए। जब भी राजत्व इस क्षेत्र में यहोवा की भूमिका को हड़पता है तो वह गलत होता है।" दूसरे शब्दों में, राजत्व गलत नहीं है *per se*; यह गलत है जब यह यहोवा के नियम को प्रतिस्थापित करता

है।

"अबीमेलेक की कहानी, जबकि गिदोन के पुत्रों में से एक द्वारा शकेम के नियुक्त शासन के मूल्यांकन में निश्चित रूप से नकारात्मक है, राजत्व की निंदा नहीं है *per se*, बल्कि यह राजत्व की आलोचना है जब यह अपराध और अन्याय पर आधारित है [जो कि अबीमेलेक का "शासनकाल" था] और उस समय के कनानी शहर-राज्यों में पाए जाने वाले राजत्व के प्रकार के आधार पर बनाया गया है। न्यायाधीशों की पुस्तक न्यायाधीशों और राजाओं की भूमिका के सापेक्ष गुणों के प्रश्न पर जो परिप्रेक्ष्य लाती है, उस पर एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण यह है कि कोई भी संस्था एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल की समस्याओं का अंतिम समाधान नहीं है। कुछ मामलों में, उचित ढंग से कल्पना की गई और प्रयोग की गई राजसत्ता पापी लोगों को वाचा के रास्ते पर ले जाने के लिए दृश्यमान संप्रभु में केंद्र सरकार को अधिकार प्रदान करके न्यायाधीशों के काल की अराजकता को ठीक कर देगी। लेकिन राजत्व किसी भी मानवीय संस्था की कमियों और विफलताओं के अधीन भी है।

फिर भी, राजत्व को वाचा के साथ एकीकृत किया गया है - यह राजत्व की एक अवधारणा है जो अपने लोगों पर यहोवा की अंतिम संप्रभुता की पुष्टि करती है - न्यायाधीशों की पुस्तक में कहीं भी निंदा नहीं की गई है। मुझे ऐसा लगता है कि जब हम सैमुएल में पहुंचते हैं, जब राजत्व वास्तव में स्थापित हो जाता है तो यह एक मुद्दा बन जाता है। वहां राजत्व वाचा द्वारा स्थापित किया गया है और यहोवा की परम संप्रभुता और राजत्व को मान्यता देता है, न कि उसके प्रतिस्थापन के रूप में। "पुराना नियम न्यायाधीशों और राजाओं दोनों की संस्थाओं को मुक्ति के दिव्य कार्यक्रम में महत्वपूर्ण मानने में सुसंगत है। वास्तव में, यह न्यायाधीशों की विफलता ही है जो आने वाले न्यायाधीश की आवश्यकता की ओर इशारा करती है। 2 तीमुथियुस 4:8 अंत में प्रभु को एक धर्मी न्यायाधीश, अंतिम न्यायाधीश के रूप में बताता है - ठीक वैसे ही जैसे यह इस्राएल और यहूदा के राजाओं की विफलता है जो महान राजा के आने की आवश्यकता की ओर इशारा करता है (यूहन्ना 1: 49, प्रकाशितवाक्य 19:16). इस बिंदु पर वे टिप्पणियाँ हमें उसी मुद्दे के लिए खड़ा करती हैं जो 1 शमूएल 8-12 में आने पर फिर से प्रकट होगा, जहां राजत्व वास्तव में स्थापित होता है।

दया

रूथ की पुस्तक के बारे में आपकी रूपरेखा में मेरे पास कुछ भी नहीं है, जो न्यायाधीशों और सैमुअल के बीच हमारी बाइबिल में डाली गई है। मैं रूथ पर एक संक्षिप्त टिप्पणी करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि रूथ की पुस्तक के कुछ उद्देश्य हैं। यह पुस्तक हमें न्यायाधीशों के इस अंधकारमय काल के दौरान चल रही चीजों की एक अलग तस्वीर देती है, जब इतनी अराजकता और धार्मिक और नैतिक गिरावट थी। यह उस समय की कहानी है। रूथ 1:1 में सूचना: "जिन दिनों में न्यायी न्याय करते थे, उस समय देश में अकाल पड़ा। यहूदा के बेटलेहेम का एक पुरुष और उसकी पत्नी और बेटे मोआब में रहने को गए। उस पुरुष का नाम एलीमेलेक और उसकी पत्नी का नाम नाओमी था।" वे इस्राएल से निकलकर मोआब को गए, जहां एलीमेलेक मर गया। उसके दो बेटों ने मोआबी महिलाओं से शादी की, एक का नाम ओर्पा और दूसरे का रूथ था। फिर उसके दो बेटे मर जाते हैं और वह अपने बेटों और पति के बिना रह जाती है। वह बेथलहम वापस जाने का फैसला करती है और उसकी बहू रूथ उसके साथ जाती है। रूथ अंततः बोअज़ से शादी करती है।

मैं उस कहानी पर ध्यान नहीं दूँगा। लेकिन जिस चीज़ की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह पुस्तक का अंत है जहाँ आपके पास डेविड की वंशावली है। यदि आप अध्याय 4 के श्लोक 17 को देखें, तो आप पढ़ते हैं, "वहां रहने वाली स्त्रियों ने कहा, 'नाओमी के एक बेटा है।' और उन्होंने उसका नाम ओबेद रखा। वह यिशै का पिता, दाऊद का पिता था। तो, पेरेज़ की वंशावली इस प्रकार है: पेरेज़ हेस्रोन का पिता था, हेस्रोन राम का पिता था, राम अम्मीनादाब का पिता था, अम्मीनादाब नहशोन का पिता था, नहशोन सलमोन का पिता था, सलमोन बोअज़ का पिता था, बोअज़ ओबेद का पिता, ओबेद यिशै का पिता, और यिशै दाऊद का पिता।"

तो रूथ की पुस्तक के अंत में, आपके पास एक वंशावली है जो डेविड के वंश का पता लगाती है और आप उस वंश में देखते हैं कि रूथ उस पंक्ति के शीर्ष पर है। आप नीचे जाएँ: दादा, पिता, और फिर दाऊद के पिता यिशै के पास। मुक्तिदायी इतिहास के इस प्रवाह के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है, जहां अंततः महिला का बीज है जिससे अंततः ईसा मसीह आएंगे। जब हम मत्ती 1:1 पर पहुँचते हैं तो उसमें मुख्य कड़ी है, "यीशु मसीह इब्राहीम का पुत्र, दाऊद का पुत्र।" तो कहानी में डाला गया, यहां हमारे पास बोअज़ और रूथ से डेविड तक जाने वाले वादा किए गए बीज की उस

पंक्ति का एक हिस्सा है।

वी. 1 और 2 सैमुअल

ए. सामान्य टिप्पणियाँ

1. नाम

आइए 1 और 2 सैमुअल पर चलते हैं। यह रोमन अंक v, 1 और 2 सैमुअल है। A. "सामान्य टिप्पणियाँ" है। 1. "नाम" है। यह नाम सैमुअल से लिया गया है, जो इस पुस्तक के पहले भाग में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। यह 55 अध्यायों वाली एक लंबी पुस्तक है - 1 सैमुअल में 31 और 2 सैमुअल में 24 अध्याय। तो वहाँ बहुत सारी सामग्री है। शमूएल परमेश्वर का साधन था, जिसे शाऊल और दाऊद, इस्राएल के पहले दो राजाओं, दोनों का अभिषेक करने के लिए भेजा गया था। मुझे लगता है कि अक्सर यह गलत धारणा होती है कि सैमुअल 1 और 2 सैमुअल का लेखक है। वह स्पष्ट रूप से लेखक नहीं है क्योंकि उसकी मृत्यु का रिकॉर्ड 1 शमूएल 25:1 में है। तो सैमुअल के जाने से पहले आप किताब में बहुत दूर नहीं हैं। वह शाऊल और दाऊद दोनों का अभिषेक करता है, लेकिन वह दाऊद के जीवन के अधिकांश समय तक उसके साथ नहीं रहता है और शाऊल जीवित नहीं रहता है।

हालाँकि, मुझे लगता है कि यह संभव है कि लेखक कोई भी हो - और यह एक गुमनाम लेखक है, हम नहीं जानते कि वह कौन था - यह संभव है कि उसने सैमुअल के साथ-साथ नाथन और गाद की सामग्री का भी उपयोग किया हो। यदि आप 1 इतिहास 29:29 को देखें, तो इसमें शमूएल, नाथन और गाद का स्पष्ट संदर्भ है। आपने क्रॉनिकलर से पढ़ा, "राजा दाऊद के शासनकाल की शुरुआत से अंत तक की घटनाएँ शमूएल द्रष्टा के अभिलेखों, नातान भविष्यवक्ता के अभिलेखों और गाद द्रष्टा के अभिलेखों में लिखी गई हैं।" इसलिए नातान और गाद भविष्यवक्ता थे जिन्होंने विभिन्न बिंदुओं पर दाऊद को चेतावनी दी थी। शमूएल ने ही दाऊद का अभिषेक किया था। वे सभी रिकॉर्ड रखते थे और चीज़ें लिखते थे। जब इतिहासकार लिख रहा था तब वे अभिलेख उसके पास उपलब्ध थे और वह उनका संदर्भ देता है।

सैमुअल मूल रूप से एक इकाई थी - एक किताब, दो नहीं। सेप्टुआजेंट के अनुवादकों द्वारा

इसका दो भागों में विभाजन किया गया। एक उपयुक्त विभाजन स्थान शाऊल की मृत्यु है, जो अब 1 शमूएल के अंतिम अध्याय, अध्याय 31 में होता है। यह उचित है क्योंकि यहोशू यहोशू की मृत्यु के साथ समाप्त होता है, व्यवस्थाविवरण मूसा की मृत्यु के साथ समाप्त होता है, और यहां 1 शमूएल के साथ समाप्त होता है शाऊल की मृत्यु.

शीर्षक अलग-अलग है, जिसे सेप्टुआजेंट द्वारा "राज्यों की 1 और 2 पुस्तकें" के रूप में नामित किया गया है। जब आप वुल्गेट पहुँचते हैं, तो यह 1 और 2 किंग्स में बदल जाता है। और मुझे लगता है कि यह ध्यान देने लायक है। रोमन कैथोलिक बाइबिल अध्ययन में वुल्गेट के बाद की परंपरा में एक लंबी परंपरा है जो 1 किंग्स, 2 किंग्स, 3 पर टिप्पणियाँ लिखते हैं। राजा, और 4 राजा, क्योंकि जिसे हम वुल्गेट की परंपरा में 1 और 2 सैमुअल कहते हैं वह 1 और 2 राजा है, और हमारे लिए 1 और 2 राजा वह है जिसे वुल्गेट 3 और 4 राजा कहता है। तो आपको अभी भी ऐसी टिप्पणियाँ मिलेंगी जो उन शीर्षकों का अनुसरण करती हैं। जब आप किसी समय पुस्तकालय में हों और "3 और 4 राजा" पढ़ें तो आपको इसके बारे में आश्चर्य हो सकता है। वह क्या है? 3 और 4 राजा वे हैं जिन्हें हम 1 और 2 राजा कहते हैं, क्योंकि सैमुअल को 1 और 2 राजा कहा जाता था। तो ये हैं इसके नाम पर टिप्पणियाँ।

2. सामग्री और उसके महत्व का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण: राजत्व और वाचा

2. "सामग्री और उसके महत्व का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण है।" सैमुअल न्यायाधीशों के कार्यकाल की समाप्ति के साथ शुरू होता है। शमूएल स्वयं एक न्यायाधीश था, न्यायाधीशों में अंतिम। किताब डेविड की मृत्यु से कुछ समय पहले समाप्त होती है। 1 और 2 शमूएल हमें दाऊद की मृत्यु के बारे में नहीं बताते। हमें 1 राजा 1 और 2 में डेविड की मृत्यु के बारे में तब पता चलता है जब हम 1 राजा 1 और 2 में सुलैमान के शासनकाल की ओर बढ़ते हैं। सैमुअल की अवधि लगभग 130 वर्षों की है। यह उस समय का विस्तृत राजनीतिक इतिहास नहीं है, लेकिन अधिकांश भाग के लिए यह पुस्तक में तीन प्रमुख व्यक्तित्वों, अर्थात् सैमुअल, शाऊल और डेविड से जुड़ी कहानियों का संग्रह है।

मुझे ऐसा लगता है कि उन आख्यानों को एक साथ बांधने वाला प्रमुख विषय राजसत्ता और वाचा का विषय है। लेकिन जब आप राजत्व और अनुबंध को विषय के रूप में लेते हैं तो आप पाते हैं कि लोगों द्वारा अनुरोध किया गया राजत्व अनुबंध का खंडन है। यह अध्याय 8 में है जहां इस्राएल के बुजुर्ग शमूएल के पास आते हैं और कहते हैं, "हमें एक राजा दो।" आपने अध्याय 8 में पढ़ा कि इससे शमूएल अप्रसन्न हुआ क्योंकि उन्होंने यह भी कहा, "हम राष्ट्रों के समान एक राजा चाहते हैं, जो बाहर जाकर युद्ध में हमारा नेतृत्व करेगा और संभवतः हमें विजय दिलाएगा।" तो लोगों द्वारा जिस प्रकार के राजत्व का अनुरोध किया गया था और जिस कारण से वे एक मानवीय राजा चाहते थे वह यहोवा के राजत्व को अस्वीकार करने से आता है। अनुरोध अनुबंध का खंडन था। शमूएल द्वारा स्थापित राजत्व वाचा के अनुरूप था। यदि आप 8-12 से उस खंड में आगे जाते हैं तो आप पाते हैं कि शाऊल का उद्घाटन अंततः अनुबंध नवीनीकरण समारोह के संदर्भ में किया गया है जिसमें यहोवा के प्रति निष्ठा की पुष्टि की जाती है। यह 1 शमूएल 12 में है। इसलिए शमूएल द्वारा स्थापित राजत्व वाचा के अनुरूप है।

जब आप पुस्तक में आगे बढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि शाऊल द्वारा प्रचलित राजत्व वाचा के आदर्श के अनुरूप नहीं था। उसने पैगम्बर की बात सुनने से इन्कार कर दिया। जब शमूएल ने उससे जवाब-तलब किया तो उसने पश्चाताप करने से इन्कार कर दिया। और अंततः प्रभु ने शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया और शमूएल को उसके स्थान पर अभिषेक करने के लिए भेजा। तब आप पाते हैं कि डेविड द्वारा प्रचलित राजत्व वाचा के राजा के आदर्श का एक अपूर्ण लेकिन सच्चा प्रतिनिधित्व था। डेविड को ईश्वर के अनुरूप व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। डेविड को निश्चित रूप से असफलताएँ मिलीं, लेकिन जब नाथन ने उससे हिसाब मांगा, तो उसने पश्चाताप किया। उसने कोई बहाना नहीं बनाया, उसने अपने पाप को उचित ठहराने की कोशिश नहीं की। मुझे ऐसा लगता है कि यही उसके और शाऊल के बीच मूलभूत अंतर है।

सैमुअल की संरचना

तो यही बात 1 और 2 सैमुअल के माध्यम से आख्यानों के इस प्रवाह की एकता को विभाजित करती है। उस हैंडआउट के पृष्ठ 2 को देखें। पूरी किताब को तीन खंडों में विभाजित किया जा

सकता है जो किताब में तीन प्राथमिक व्यक्तित्वों-सैमुअल, शाऊल और डेविड पर केंद्रित है। 1 शमूएल 1-12 में, प्राथमिक व्यक्तित्व शमूएल है। हालाँकि अध्याय 4-6 में सैमुअल मौजूद नहीं है, वह अन्य अध्यायों में बहुत प्रमुख तरीके से मौजूद है। 1 शमूएल 13-31 में ध्यान शाऊल पर है। अध्याय 12 में उसका उद्घाटन किया गया है और 13 में उसका शासनकाल शुरू होता है। अध्याय 13 से अंत तक, आप शाऊल के जीवन में गिरावट का पता लगाते हैं। यह बद से बदतर होता चला जाता है और अंततः आत्महत्या में समाप्त होता है। तीसरा चित्र डेविड है, जो 2 सैमुअल, 24 अध्यायों का है।

आप अपने हैंडआउट पर ध्यान देंगे कि मैंने टिप्पणी की है, "हिब्रू बाइबिल में ये खंड क्रमशः 17, 34 और 45 पेज के हैं, जो काफी दिलचस्प है। मेरा मानना है कि दी गई जगह की मात्रा उस महत्व से संबंधित है जिसे इनमें से प्रत्येक व्यक्ति से जोड़ा जा सकता है। डेविड का अब तक का सबसे बड़ा है। मुझे लगता है कि यह, अपने आप में, डेविड के शासनकाल को उजागर करने की लेखक की इच्छा का एक संकेत है।

बी. 1 और 2 सैमुअल में मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण प्रगति

1. सैमुअल ने इब्राहीम से किए गए परमेश्वर के वादे की अनंतिम पूर्ति को दर्ज किया है
वादा किए गए देश के संबंध में

बी. आपके हैंडआउट और आपकी रूपरेखा पर है: "1 और 2 सैमुअल में मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण प्रगति।" 1 और 2 शमूएल में मुक्ति के इतिहास की प्रगति की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए मेरे पास यहां तीन चीजें सूचीबद्ध हैं। पहला यह है कि शमूएल ने वादा किए गए देश की सीमा के संबंध में इब्राहीम से किए गए परमेश्वर के वादे की अनंतिम पूर्ति को दर्ज किया है। इब्राहीम से किया गया वह वादा इब्राहीम के साथ परमेश्वर की वाचा के केंद्रीय तत्वों में से एक था। इसका वर्णन उत्पत्ति 15:18-21 में किया गया है—आइए इसकी ओर मुड़ें। प्रभु कहते हैं, "मैं तुम्हारे वंशजों को मिस्र की नदी से लेकर महान नदी परात तक का यह देश देता हूँ।" तो मोटे तौर पर इसराइल को मिस्र की नदी से लेकर फ़रात की उत्तरपूर्वी नदी तक की ज़मीन पर कब्ज़ा करना है। उत्पत्ति 15 में उस वादे की पुष्टि उत्पत्ति 17:8, संख्या 34:1-12, व्यवस्थाविवरण 1:7, 11:24, यहोशू 1:4, और भजन 105 में की गई है। दूसरे शब्दों में, वह वादा कई बार दोहराया गया है।

मैं आपका ध्यान उन असंख्य सन्दर्भों में से व्यवस्थाविवरण 1:7 की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इसमें लिखा है, “डेरे तोड़ो और एमोरियों के पहाड़ी देश में आगे बढ़ो; अराबा में, पहाड़ों में, पश्चिमी तलहटी में, नेगेव में और तट के किनारे, कनानियों के देश और लेबनान तक, महान नदी परात तक, सभी पड़ोसी लोगों के पास जाओ। देख, मैं ने यह भूमि तुझे दे दी है।” यूफ्रेट्स के एक अन्य संदर्भ पर ध्यान दें। यहोशू 1:4 कहता है, “तेरा क्षेत्र जंगल से लेकर लबानोन तक, और महान नदी परात से लेकर समस्त हिती देश तक - पश्चिम में महान समुद्र तक फैला होगा।” इसलिए मुझे लगता है कि हम आम तौर पर उस वादे की भूमि के बारे में सोचते हैं जिसमें डैन से लेकर बेशेबा तक शामिल है। लेकिन मूसा, जोशुआ और इन अन्य संदर्भों द्वारा दोहराए गए इब्राहीम से किए गए वादे में वे सीमाएँ बड़ी हैं।

अब मुझे लगता है कि वह वादा शुरू में पूरा हुआ जब यहोशू ने भूमि में प्रवेश किया, लेकिन केवल आंशिक रूप से। न्यायाधीश 1 में इसे पूरा करने तक इसका पालन नहीं किया गया जहां आपको सभी जनजातीय सीमाएँ मिलती हैं। इसमें मिस्र से लेकर फ़रात तक की सीमाएँ शामिल थीं। इसका एहसास डेविड को हुआ, जिसने इज़राइल की संप्रभुता को उन सीमाओं तक बढ़ाया, आंतरिक रूप से पलिशतियों के खिलाफ और बाहरी तौर पर भी। आपको दाऊद की विजयों की सूची 2 शमूएल 8 में मिलेगी। आप श्लोक 3 में पढ़ते हैं, “दाऊद ने सोबा के राजा रहोब के पुत्र हददेजेर से युद्ध किया, जब वह परात नदी के किनारे अपना नियंत्रण बहाल करने गया था। दाऊद ने उसके एक हजार रथों पर कब्ज़ा कर लिया।” तो यह सुलैमान के बारे में कहा जा सकता है कि जब आप 1 राजाओं में आते हैं और 1 राजा 4:21 में दाऊद के राज्य को उसके पुत्र सुलैमान को हस्तांतरित करते हैं, “सुलैमान ने नदी से लेकर पलिशतियों की भूमि तक के सभी राज्यों पर शासन किया।” मिस्र की सीमा के रूप में।” “नदी” क्या है? वह फ़रात नदी है। श्लोक 24 पर जाएँ: “क्योंकि वह तिपसा से गाजा तक नदी के पश्चिम के सभी राज्यों पर शासन करता था, और हर तरफ शांति थी।” इस मानचित्र पर तिपसा यहाँ परात नदी के ऊपर है। वह वह क्षेत्र था जिस पर दाऊद और सुलैमान का नियंत्रण था।

इसलिए मुझे लगता है कि जब आप 2 शमूएल 8 को विजय की उस सूची के साथ पढ़ते हैं, तो यह पुस्तक में शामिल होने के लिए एक साधारण चीज़ की तरह लग सकता है, लेकिन इसमें कुछ

धार्मिक महत्व भी है - और वह है, भगवान वफादार है; वह जो कहेगा उसे पूरा करेगा। उसने इसराइल को मिस्र की नदी से लेकर फ़रात नदी तक की ज़मीन कब्ज़ा करने का वादा किया था। शमूएल और शाऊल के समय में, यह मूलतः अकल्पनीय था। पलिश्ती उन पर दबाव डाल रहे थे और इसराइल लगभग उनके द्वारा पराजित हो चुका था, लेकिन ईश्वर की व्यवस्था में उपजाऊ वर्धमान के महान राष्ट्र - बेबीलोन, अश्शूर, हिती और एलाम - अपने इतिहास के कमजोर दौर में थे, और डेविड और का राज्य सुलैमान उतना ही बड़ा हुआ जितना परमेश्वर ने इब्राहीम से सदियों पहले वादा किया था।

जहाँ तक प्रगतिशील मुक्ति इतिहास की बात है, मुझे लगता है कि पहली चीज़ जो हम देखते हैं वह प्रतिज्ञा भूमि का विस्तार करने के संबंध में इब्राहीम से किए गए वादे की अस्थायी पूर्ति है। मैंने "अनंतिम" कहा, क्योंकि उस वादे को शाश्वत वादा कहा जाता है। मुझे नहीं लगता कि यह पूरी तरह से पूरा हुआ है। मैं भविष्य में इसकी पूर्ति की आशा करता हूँ। जब आप वर्तमान राजनीतिक स्थिति को देखते हैं, तो यह कल्पना करना कठिन है कि इज़राइल फरात नदी तक के क्षेत्र को जीत लेगा।

2. राजत्व

2 सैमुअल पर वापस जाएँ, जहाँ हम 1 और 2 सैमुअल की किताबों में इतिहास की प्रगति देखते हैं जहाँ हमारे पास इज़राइल में राजत्व की स्थापना और राजत्व के साथ अभिषेक के संबंध का रिकॉर्ड है। उसमें दो तत्व हैं। बेशक, राजत्व एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है, लेकिन राजत्व में अभिषेक का संबंध भी महत्वपूर्ण है। यह सैमुअल की पुस्तक में है कि वाक्यांश "प्रभु का अभिषिक्त" का प्रयोग राजा के पर्याय के रूप में किया जाता है। इसका महत्व तब देखा जाता है जब यह एहसास होता है कि "अभिषिक्त" और "मसीहा" एक ही हिब्रू शब्द का अनुवाद और लिप्यंतरण हैं: *मेशिया* का अर्थ है "अभिषिक्त।" *क्रिस्टोस* न्यू टेस्टामेंट और सेप्टुआजेंट दोनों में ग्रीक अनुवाद है *मेशिया*, जो हिब्रू से आया है जिसका अर्थ है "अभिषेक करना।" यह शब्द हमारे अंग्रेजी अनुवादों में "क्राइस्ट" के रूप में अनुवादित होता है। इसलिए इस शब्द "अभिषेक" में बहुत दिलचस्प अर्थ हैं।

दाऊद और शाऊल का अभिषेक कैसे किया गया इसकी कहानियाँ शाऊल के लिए 1 शमूएल 9:16 और 10:1 में और दाऊद के लिए 16:13 में पाई जाती हैं। राजा के लिए "प्रभु का

अभिषिक्त" पदनाम कई संदर्भों में प्रकट होता है जिन्हें मैंने 1 और 2 शमूअल में सूचीबद्ध किया है।

अब जहां तक राजसत्ता का सवाल है, यह छुटकारे के इतिहास की प्रगति में अचानक से सामने नहीं आता है। बाइबिल के पहले के कथनों में राजसत्ता की प्रत्याशा है। यह पहली बार शीलो में याकूब की भविष्यवाणी में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है - उत्पत्ति 49:10 में यहूदा के गोत्र का शासक। जब याकूब अपने सभी बेटों को ये आशीर्वाद देता है, तो वह 49:10 में कहता है: "राजदंड [राजसत्ता का प्रतीक] यहूदा से नहीं हटेगा, और न ही शासक की छड़ी उसके पैरों के बीच से तब तक हटेगी, जब तक कि वह जिसके पास है वह न आ जाए, और राष्ट्रों की आज्ञाकारिता उसकी होगी।" तो उस भविष्यवाणी में, यहूदा को याकूब के आशीर्वाद में, राजत्व की आशा की गई है।

संख्या 24:7-17 में बिलाम की वाणी में राजत्व को और अधिक विकसित किया गया है। जब हम संख्याओं की पुस्तक देख रहे थे तो मैंने आपका ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। और फिर व्यवस्थाविवरण 17:14-20 को देखें। व्यवस्थाविवरण के उस खंड को अक्सर "राजा का कानून" कहा जाता है, जहां मूसा पहले से कुछ सिद्धांत निर्धारित करता है जो कि राजत्व स्थापित होने पर इसराइल के राजाओं के आचरण को नियंत्रित करने के लिए होते हैं। इसलिए व्यवस्थाविवरण 17:14-20 उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब प्रभु अपने लोगों के वादा किए गए देश में पहुंचने के बाद उन पर एक राजा नियुक्त करेगा। इसलिए राजत्व प्रत्याशित है, और मुझे नहीं लगता कि राजत्व कुछ ऐसा था जो मौलिक रूप से गलत था या अपने लोगों के लिए भगवान के उद्देश्यों के विपरीत था। दरअसल, यह उनके उद्देश्य का हिस्सा था. वह एक राजा चाहता था. हम उसके बारे में बाद में बात करेंगे।

1 शमूअल हमें दिखाता है कि राजसत्ता कैसे स्थापित हुई। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि यह इस तरह से किया गया जिससे संविदात्मक निरंतरता का आश्वासन मिला। हम इसके बारे में बाद में और बात करेंगे। चौंकाने वाली बात यह है कि शाऊल का शासन असफल साबित हुआ क्योंकि वह वाचा से मुकर गया।

एक। डेविडिक वाचा

दाऊद को शाऊल के स्थान पर सिंहासन पर बिठाया गया, और फिर उसे उल्लेखनीय वादा दिया गया कि उसका राजवंश हमेशा के लिए कायम रहेगा। वह 2 शमूअल 7:11-16 और 23:1-5 में

है। जैसा कि मैंने अगले पैराग्राफ के पहले वाक्य में नोट किया है, यह पूरी किताब का चरम बिंदु है। मुझे लगता है कि डेविड से किया गया वह वादा, आप कह सकते हैं, छुटकारे के इतिहास की प्रगति में सबसे महत्वपूर्ण घटना है, जैसा कि सैमुअल की पुस्तक में दर्ज है।

आइए 2 शमूएल 7:10 और उसके बाद देखें: "और मैं अपनी प्रजा इस्राएल को एक स्थान दूंगा, और उन्हें बसाऊंगा, कि उनका अपना एक घर हो, और वे फिर किसी उपद्रव में न रहें। दुष्ट लोग अब उन पर अन्धेर न करेंगे, जैसा उन्होंने आरम्भ में किया, और जब से मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल पर प्रधान नियुक्त किया है, तब से करते आए हैं। मैं तुझे तेरे सब शत्रुओं से विश्राम भी दूंगा। यहोवा तुम से यह घोषणा करता है, कि यहोवा स्वयं तुम्हारे लिये घर स्थापित करेगा।" अब, इस खंड में शब्दों का खेल है। अध्याय की शुरुआत में, डेविड ने प्रभु से प्रभु के लिए एक घर बनाने की अनुमति मांगी थी, और नाथन कहते हैं, "आगे बढ़ें और इसे करें।" लेकिन फिर उसे वापस जाना पड़ा और सुलह करनी पड़ी क्योंकि भगवान ने कहा, "नहीं, यह मेरी इच्छा नहीं है कि तुम ऐसा करो, लेकिन तुम्हारा बेटा ऐसा करेगा। आप मेरे लिए मंदिर के अर्थ में घर नहीं बनाने जा रहे हैं; मैं तुम्हारे लिए राजवंश की भावना से एक घर बनाने जा रहा हूँ। तो आपको यह नाटक "घर" शब्द पर मंदिर बनाम राजवंश के अर्थ में मिलता है। "जब तेरे दिन पूरे हो जाएंगे, और तू अपने पुरखाओं के पास सो जाएगा, तब मैं तेरे वंश को तेरे स्थान पर खड़ा करूंगा, जो तेरे ही शरीर से उत्पन्न होगा, और मैं उसका राज्य स्थिर करूंगा। वह वही है जो मेरे नाम के लिये भवन बनाएगा, और मैं उसके राज्य की गद्दी सदैव के लिये स्थिर करूंगा। मैं उसका पिता बनूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, तब मैं उसको मनुष्योंके द्वारा बेंतोंसे, और कोड़ोंसे दण्ड दूंगा। परन्तु मेरा प्रेम उस से कभी न छीना जाएगा, जैसा मैं ने शाऊल से छीन लिया, जिसे मैं ने तेरे साम्हने से दूर कर दिया। तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सम्मुख सदैव बना रहेगा; तेरा सिंहासन सदैव स्थिर रहेगा।"

बी। डेविडिक वाचा इंटरटेक्स्टुअली

तो एक शाश्वत राजवंश का वादा, दाऊद के साथ की गई वाचा, भजन 89 में भी कही गई है। आइए उस पर गौर करें, क्योंकि ये महत्वपूर्ण हैं। शब्द "दाऊद के साथ वाचा" 1 शमूएल में प्रकट नहीं होता है, लेकिन भजन 89:3 में आप पढ़ते हैं कि प्रभु कहते हैं, "मैं ने अपने चुने हुए के साथ वाचा

बान्धी है; मैंने अपने सेवक दाऊद से शपथ खाई है, 'मैं तेरे वंश को सदैव स्थिर रखूँगा और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक अटल रखूँगा।'" यह दाऊद का वादा या दाऊद की वाचा है। भजन 89 के पद 20 पर जाएँ: "मुझे अपना दास दाऊद मिल गया है; मैंने अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।" पद 28, "मैं उस पर अपना प्रेम सदा बनाए रखूँगा, और उसके साथ मेरी वाचा कभी असफल न होगी। मैं उसके वंश को सर्वदा स्थिर रखूँगा, और जब तक आकाश रहेगा, तब तक उसकी राजगद्दी कायम रखूँगा। यदि उसके पुत्र मेरी व्यवस्था को त्याग दें और मेरी विधियों का पालन न करें, यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें और मेरी आज्ञाओं का पालन न करें, तो मैं उनके पाप का दण्ड छड़ी से दूँगा।" पद 33, "परन्तु मैं उस से अपना प्रेम न छीनूँगा, और न अपनी सच्चाई का विश्वासघात करूँगा। मैं अपनी वाचा का उल्लंघन नहीं करूँगा या जो कुछ मेरे होठों ने कहा है उसमें परिवर्तन नहीं करूँगा। मैं ने एक बार अपनी पवित्रता की शपथ खाई है—और मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूँगा—कि उसका वंश सदैव बना रहेगा और उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य के समान बना रहेगा; वह आकाश में वफ़ादार गवाह चाँद की तरह हमेशा के लिए स्थापित किया जाएगा। तो ये 2 शमूएल 7 में दाऊद को दिए गए प्रभु के वादों के बारे में कहे गए शक्तिशाली मजबूत शब्द हैं।

जैसा कि मैंने पेज 3 के नीचे टिप्पणी की है, पूरी किताब का यही चरम बिंदु है। यहूदा के लिए याकूब की भविष्यवाणी की पंक्ति अब संकुचित और तीव्र हो गई है। स्त्री का वंश दाऊद के वंश से निकलेगा। डेविड आने वाले महान मसीहा राजा का पूर्वज है। जैसा कि भजन 89 में वर्णित है, यह वादा अंततः पूरा हो गया है। मत्ती 1:1 में यीशु दाऊद के पुत्र के रूप में आता है। स्वर्गदूत गैब्रियल ने मैरी से कहा कि उसका बेटा अपने पिता डेविड के सिंहासन पर बैठेगा। जब आप नए नियम के संदर्भों में जाते हैं, तो मैथ्यू में यीशु को सड़क के किनारे बैठे दो अंधे लोगों द्वारा डेविड के पुत्र के रूप में संबोधित किया जाता है। "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।" यीशु स्वयं उनसे कहते हैं, "मैं दाऊद की जड़ और वंश और भोर का चमकता तारा हूँ।"

अब साथ ही मुझे लगता है कि हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि एक नेता के रूप में डेविड की उपलब्धियाँ या गुण इतने अधिक नहीं हैं, बल्कि यह ईश्वर के उद्देश्य हैं जो उसके माध्यम से पूरे होने थे जो सबसे महत्वपूर्ण हैं। इस वजह से उन्हें आदर्श नहीं बनाया गया या किसी पद पर नहीं रखा गया। उनकी कमज़ोरियाँ स्पष्ट हैं। पुस्तक के लेखक हमें अपनी असफलताओं के बारे में

बताने में संकोच नहीं करते। लेकिन अपनी कमज़ोरियों के बावजूद, वह अभी भी परमेश्वर के हृदय के अनुरूप व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। यह 1 शमूएल 13:14 और 16:7 में प्रयुक्त एक वाक्यांश है और अधिनियम 13:22 में उद्धृत किया गया है। सामान्य तौर पर, यह कहा जा सकता है कि डेविड ने वैसे ही शासन करना चाहा जैसा ईश्वर ने चाहा था कि इस्राएल पर शासन किया जाए। उनके शासनकाल ने सच्चे वाचा राजा के आदर्श को प्रतिबिंबित किया, पूरी तरह से या पूरी तरह से नहीं, बल्कि सामान्य रूप से। उसने अपने पूरे दिल की क्षमता से, प्रभु के कानून की शक्ति के तहत अपने शासन को स्थापित करने का प्रयास किया। उसके शासनकाल को 2 शमूएल 8:13 में एक ऐसे राजा के रूप में संक्षेपित किया गया है जिसने "सभी लोगों के लिए उचित और सही काम किया।" यह दाऊद के शासन के विषय में एक उच्च प्रशंसा है। फिर भी डेविड जैसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति के साथ भी, यह स्पष्ट है कि कोई भी मानव राजा उच्च आदर्श को पूरा नहीं कर सकता है। उसने पाप किया और परमेश्वर के स्तर से नीचे गिर गया। यह इस तथ्य की मान्यता से बाहर है, और इससे भी अधिक डेविड के सिंहासन के बाद के कब्जेदारों के साथ, कि आप कह सकते हैं कि डेविड वह मानक था जिसके द्वारा बाद के राजाओं को मापा गया था। राजाओं की पुस्तक में अक्सर यह कहा जाता है, "वह अपने पिता के मार्ग पर चला," या "वह दाऊद के मार्ग पर नहीं चला।" अधिकतर यह उत्तरार्द्ध था, "वह अपने पिता दाऊद के मार्ग पर नहीं चला।" डेविड के सिंहासन पर बाद में बैठने वालों के साथ भी ऐसा ही हुआ, क्योंकि राजा वाचा के आदर्श से और भी दूर होते गए।

तभी भविष्य की मसीहाई आशा उभरने लगती है। अर्थात् भविष्य में किसी समय एक राजा होगा जो दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होगा, जो किसी भी सामान्य मनुष्य से बड़ा होगा; वह एक दिव्य राजा होगा। यशायाह 7:14, "एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल होगा, परमेश्वर हमारे साथ है।" और यह दाऊद के सिंहासन पर बैठने वाले, आहाज की विफलता के संदर्भ में दिया गया एक संकेत है। आहाज प्रभु की बात नहीं सुनना चाहता था, प्रभु के मार्ग पर नहीं चलना चाहता था, प्रभु पर भरोसा करने में अपनी सुरक्षा नहीं खोजना चाहता था, बल्कि उसने असीरिया के साथ गठबंधन बनाकर सुरक्षा पाई। इसलिये दाऊद के घराने का एक योग्य प्रतिनिधि आहाज का स्थान लेगा, और वह इम्मानुएल को कहेगा, परमेश्वर हमारे साथ है। यशायाह 9:6, एक बच्चा पैदा होगा, जिसका नाम देवता को इंगित करेगा: शक्तिशाली भगवान,

चिरस्थायी पिता, शांति का राजकुमार, सरकार उसके कंधे पर होगी। और उसकी शान्ति की वृद्धि का अन्त न होगा। वह क्या करेगा? “वह दाऊद के सिंहासन पर उसके राज्य पर शासन करेगा और उस समय से लेकर सर्वदा तक उसे न्याय और धार्मिकता के साथ स्थापित और कायम रखेगा। सर्वशक्तिमान प्रभु का उत्साह इसे पूरा करेगा।” जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा उसे शक्तिशाली परमेश्वर, अनन्त पिता और शांति का राजकुमार कहा जाएगा।

यिर्मयाह 23:5 को देखें, जहां हम इस भावी मसीहा राजा के बारे में पढ़ते हैं: “प्रभु की यह वाणी है, 'वे दिन आ रहे हैं, जब मैं दाऊद के पास एक धर्मी शाखा, एक ऐसा राजा खड़ा करूंगा जो बुद्धिमानी से शासन करेगा और जो करना है वह करेगा।" देश में न्यायपूर्ण और सही।" दाऊद के शासनकाल की विशेषता इसी प्रकार थी। “उसके दिनों में यहूदा बचाया जाएगा और इस्राएल सुरक्षित रहेगा। यह वह नाम है जिससे उसे बुलाया जाएगा: यहोवा हमारी धार्मिकता।” यह एक दिव्य राजा है जो भविष्य में किसी समय दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा।

1 और 2 शमूएल में हमारे पास इसराइल में राजत्व की स्थापना का रिकॉर्ड है और यह आने वाली किसी बड़ी चीज़ की ओर इशारा करता है: मसीहा, सारी पृथ्वी का राजा। इसलिए राजसत्ता और मसीहाई अपेक्षा पुराने और नए नियम के युगांतशास्त्र का केंद्र बन गए हैं। यह बाइबिल का अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य है। इसकी जड़ें 1 और 2 सैमुअल में मिलती हैं। यहीं से यह सब शुरू होता है, क्योंकि वहीं से राजत्व स्थापित होता है। यहीं पर अभिषिक्त होने का यह विचार सबसे पहले आकार लेता है, और यह कुछ ऐसा बन जाता है जो 1 और 2 शमूएल के बाद मुक्तिदायक इतिहास की प्रगति में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। तो यह दूसरा तथ्य है। 1 शमूएल में, हमें इज़राइल में राजत्व की स्थापना और राजत्व के साथ अभिषेक के संबंध के बारे में बताया गया है।

3. 1 और 2 सैमुअल हमें बताएं कि जेरूसलम कैसे धार्मिक और राजनीतिक केंद्र बन गया

तीसरी बात: 1 और 2 सैमुअल हमें बताते हैं कि कैसे यरूशलेम उन वर्षों का धार्मिक और राजनीतिक केंद्र बन गया। 2 शमूएल में हमने दाऊद की सिंघोन के यबूसी शहर पर विजय के बारे में पढ़ा, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया। वह 2 शमूएल 6 में है। अध्याय 6 में आपने पढ़ा कि वह सन्दूक को उस शहर में लाता है, इसे राष्ट्र का धार्मिक केंद्र बनाता है और स्पष्ट रूप से प्रदर्शित

करता है कि वह यहोवा को भूमि के सर्वोच्च शासक के रूप में मान्यता देता है। वाचा के सन्दूक को यहोवा के सिंहासन के आसन के रूप में वर्णित किया गया है। यहोवा करूबों के बीच में विराजमान है। तो यह ऐसा है जैसे कि अदृश्य यहोवा सन्दूक से इस्राएल के लोगों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करता है और शासन करता है। मुझे ऐसा लगता है कि सिय्योन या यरूशलेम पर विजय प्राप्त करने के बाद डेविड का पहला कार्य सन्दूक को उस शहर में लाना है। प्रतीकात्मक रूप से यह कह रहा है, "मैं तुम्हारा संप्रभु नहीं हूँ, यहोवा है।" वह उस सन्दूक पर करूबों के बीच सिंहासन पर बैठा है। 2 शमूएल 6 से आगे, यरूशलेम इज़राइल का धार्मिक और राजनीतिक केंद्र बन गया और उस दिन से आज तक वैसा ही बना हुआ है। जैसा कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में देखा गया है, यह भविष्य में ईश्वर के उद्देश्यों में महत्वपूर्ण बना रहेगा। तो यह एक और महत्वपूर्ण बात है जो 1 और 2 सैमुअल में घटित हुई। जब आप आज अखबार उठाते हैं, तो आप यरूशलेम के बारे में कहानियाँ सुनते हैं। यह सब 1 और 2 सैमुअल में शुरू हुआ। भगवान ने इतिहास में अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इस साइट का उपयोग किया है। कोई प्रश्न या टिप्पणी?

सी. सैमुअल का जीवन

5. राजत्व और अनुबंध की निरंतरता की स्थापना

मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि मैं यहीं सी., "सैमुअल का जीवन" पर रुक जाऊँ। मैं सैमुअल के जीवन पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, लेकिन फिर अगले सप्ताह अपना अधिकांश समय संख्या 5 पर केंद्रित करूँगा। अक्षर सी, "राजत्व की स्थापना और वाचा की निरंतरता," और उससे जुड़े कुछ मुद्दे। धर्मतंत्र के पुनर्गठन और धर्मतंत्र की संरचना में राजत्व के एकीकरण का यह मुद्दा कुछ ऐसा है जिसका अत्यधिक महत्व है। तो हम उस पर कुछ समय बिताएंगे, और फिर मैं संभवतः अंतिम पृष्ठ पर 1 और 2 किंग्स पर कुछ टिप्पणियों के साथ समय समाप्त करूँगा। अगला सप्ताह हमारा आखिरी सत्र है, इसलिए हम इसे अगले सप्ताह समाप्त करेंगे।

मुझे लगता है कि ईसा मसीह के समय भ्रम था क्योंकि उम्मीद थी कि मसीहा आएं, रोमनों को बाहर निकाल देंगे और पृथ्वी पर शासन करेंगे। क्यों? यह विचार कुछ भविष्यवाणियों के आधार पर स्थापित किया गया था। जो बात समझ में नहीं आई वह यह थी कि मसीह दो बार आने वाले थे।

पहली बार, वह पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए, पीड़ित सेवक के रूप में आने वाला था, जो पुराने नियम की एक अन्य भविष्यवाणी में एक आकृति थी। दूसरी बार, वह सत्ता के साथ आएंगे-और यह उस समय कई लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से सुलझाया या समझा नहीं गया था।

सारा हॉकिन्स द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया